बच्चन जी की आत्मकथा में स्वतंत्रता संग्राम की झलक

डॉ. देवी प्रकाश त्रिपाठी*

कवि, लेखक, पत्रकार एवं शिक्षक डॉ. हरिवंश राय बच्चन जी का जन्म २७ नवम्बर १९०७ ई० को इलाहाबाद (उ.प्र.) में उस समय हुआ जिस समय देश में स्वतंत्रता के लिए हमारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने दोनों विधा अपना ली थी - नरम एवं गरम। इसी समय कांग्रेस के १९०७ ई० के सूरत अधिवेशन में दोनों दल अंग्रेजों के सामने आए थे। बच्चन जी के पिता जी के पिता जी के पिता जी के पिता जी, जी की पुत्री राधा जो ९५ वर्ष की अवस्था पूरी कर मृत्यु को प्राप्त हुयी थीं।[१] उनसे डॉ.बच्चन जी ने बहुत कुछ सुना, समझा, देखा एवं सीखा था। विभिन्न राष्ट्रीय नेताओं के भाषणों को या तो सुना था या पढ़ा था अथवा पायनियर के रिपोर्टर होने के कारण उनसे मुलाकात की थी। आप ने श्रीमती 'एनीबेसेन्ट' तथा 'लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक' के सम्मान में उनकी बग्घी (गाड़ी) खींची थी।[२] अलीबन्धुओं -मुहम्मदअली एवं शौकतअली का भाषण सुना था।[३] महामना पंडित मदनमोहन मालवीय जी पड़ोसी ही थे। एक बार गांधी जी से किसी ने शिकायत की कि जिस सम्मेलन में आप सभापति हैं उसमें मदिरा का गुणगान किया जाय, बड़े आश्चर्य की बात है। दूसरे दिन अंतरंग सभा की रात १२ बजे बैठक होनी थी, गांधी जी ने बच्चन जी को बुलाया तथा शिकायत की चर्चा की और कुछ पद सुनने चाहे। इस पर आप ने मधुशाला की ऐसी पंक्तियां सुनाई कि गांधी जी ने कहा - ''इसमें तो मदिरा का गुणगान नहीं है।''[४] वे पंक्तियां थीं-

''मदिरालय जाने को घर से चलता है पीने वाला,
किस पथ से जाऊँ, असमंजस में है वह भोलाभाला;
अलग-अलग पथ बतलाते सब, पर मैं यह बतलाता हूँ,
राह पकड़ तू एक चला चल पा जाएगा मधुशाला।।''
''मुसलमान औ-हिन्दू हैं दो, एक, मगर, उनका प्याला
एक, मगर, उनका मदिरालय, एक मगर उनकी हाला;
दोनों रहते एक न जब तक मंदिर-मस्जिद में जाते;
बैर बढ़ाते मंदिर-मस्जिद, मेल कराती मधुशाला।''

पं. जवाहर लाल नेहरू के साथ उनके सम्पर्क जग जाहिर हैं। उन्होंने अनेक बार बच्चन जी की मदद की थी जिसे बच्चन जी ने स्पष्ट रूप से अपनी आत्मकथा में लिखा है।[५] इस तरह अनेक राष्ट्र भक्तों के साथ आप के सीधे सम्पर्क रहे थे। एक सरल, सजग एवं स्पष्ट लेखक होने के कारण बच्चन जी की बातों पर सहज ही विश्वास किया जा सकता है। उनकी लेखनी से आधुनिक इतिहास के अनेक ऐसे रहस्य सामने आत हैं जो अभी तक इतिहास की सामान्य पुस्तकों से परे हैं और जन सामान्य की पहुँच से बहुत दूर हैं।

***राजकीय कन्या महाविद्यालय बून्दी (राज.) ३२३००१**

गदर - १८५७ ई० के गदर का वर्णन बच्चन जी ने अपने (परदादा के पिता) की बेटी राधा के मुख से सुना था जो हरिवंश राय जी के जन्म के समय ८० वर्ष की थी तथा ९५ वर्ष की आयु पूरी कर मृत्यु पायी थीं।

राधा बताती दो साल पहले से (१८५५-५६ ई०) ज्योतिशी, नजूमी, साधू-फकीर कहते फिरते थे कि कम्पनी सरकार का राज्य जाएगा, नवाबी फिर से आएगी, लोग अपने दर-दीवार दुरुस्त करें, तलवार-कटार पर धार दें, तालाबों में कमल निकलने और हाथों-हाथ रोटी आने के इन्तजार में रहें।[६]

कुछ लोगों ने अपने घरों की मरम्मत भी करवा ली थी। इस समय लोग तलवार भाजने का अभ्यास करने लगे थे गदर के समय विवाह में केवल सात फेरे देकर विदाई की गयी। गदर में मर्द तो मार-काट करने के लिए निकल गए पर औरतें बड़े-बड़े घरों में इकट्ठी हो गयीं। भोलानाथ के किले से घर में मुहल्ले की चालीस-पचास औरतों ने आकर शरण ली। बनिया के आँगन की ओर कोठे की दीवार में एक खिड़की खोद ली गयी। उसी से रस्सी लटकाकर रसद खींच ली जाती। प्रायः सत्तू खाया जाता, दाना चबाया जाता कि घर से धूआं न निकले तथा औरतें-बच्चे सन्न मारे पड़े रहते।

इलाहाबाद में अंग्रेजों का जवाबी हमला बड़ी जल्दी शुरू हो गया। जब यह खबर मिली कि अंग्रेज सिपाहियों की टोलियां आ रही हैं, मर्दों को जान से मारती, औरतों की बेइज्जती करती, घरों में आग लगाती, तो मर्द अपने घर-परिवारों के बचाव के लिए लौट पड़े। लोगों के सामूहिक मोर्चे टूट गए। अंग्रेजों ने जनता में दहशत फैलाने के लिए दूरमार छोटी तोपों से गोला बरसाना शुरू कर दिया। नतीजा यह हुआ कि आमने-सामने की लड़ाई का साहस लोगों का खत्म हो गया।

बच्चन जी के मुहल्ले तक से कुछ फर्लांग पर चौक में, सरे बाजार हिन्दुस्तानियों को पकड़-पकड़ कर नीम के पेड़ से लटकाकर फांसी दी जा रही थी। राधा की शब्दावली में पेड़ों से लटकते हुए आदमी ऐसे लग रहे थे जैसे कटहल के पेड़ में फल लगे हों। ये पेड़ बच्चन जी के लड़कपन में चौक में मौजूद थे। जलियांवाला बाग के हत्याकाण्ड के बाद जब लोगों ने इन पेड़ों पर फूल चढ़ाना शुरू कर दिया तो सरकार ने उन्हें कटवा दिया। राधा जब कभी उन पेड़ों के पास से होकर गुजरती, उनको छूकर अपने कान पकड़तीं- बुदबुदाती, इज्जत राखैं राम!' पता नहीं इन पेड़ों की छाया में और क्या-क्या हुआ था।[७]

यदि उपरोक्त बातें सत्य हैं तो निश्चित ही 'डॉ. आर.सी. मजूमदार' तथा 'डॉ. एस. एन. सेन' जैसे विद्वानों के मत का खण्डन हो जाता है कि १८५७ ई० का विद्रोह सचेत योजना का परिणाम नहीं था, क्यों कि उपरोक्त विवरण सुनी बातों पर नहीं वरन् अनुभूत सत्यों पर आधारित हैं।

रोलेट ऐक्ट - अंग्रेज सरकार ने १९१८ ई० में न्यायाधीश रोलेट की अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की, इस समिति की रिपोर्ट के आधार पर फरवरी १९१९ ई० में भारत सरकार ने दो विधेयक प्रस्तावित किए जिसने २१ मार्च १९१९ ई० को कानून का रूप लिया। इसके अनुसार किसी भी व्यक्ति को संदेह मात्र के आधार पर बन्दी बनाया जा सकता था और बिना मुकदमा चलाए उसे चाहे जितने समय तक जेल में रखा जा सकता था अथवा गुप्त रूप से मुकदमा

चलाकर उसे दण्डित किया जा सकता था। इसी समय गांधी जी ने देश भर में २४ घंटे का अनशन करने का आदेश दिया था। बच्चन जी लिखते हैं उस दिन हमारे घर चूल्हा नहीं जला था, बड़ों से लेकर छोटों तक सब ने व्रत रखा था। संध्या को सारे मर्द मीटिंग में गए थे। पं. मदन मोहन मालवीय भारती भवन से पैदल चलकर होमरूल लीग के मैदान तक आए थे- हजारों लोग उनके पीछे। छोटे-मोटे व्याख्यान तो उस सन्ध्या को चौक में कई हुए थे जिसमें लोगों ने जोशोखरोश के साथ सरकार की निन्दा की थी। मालवीय जी का भाषण सुनने की मुझे याद है वे बड़े गम्भीर स्वर में बड़ी ही संयत शैली में बोले थे। उनके अंतिम वाक्य की गूंज अभी तक मेरे कानों में है। हम भगवान से प्रार्थना करते हैं वह सरकार को सुबुद्धि दे कि वह यह बिल वापस ले ले।[८]

होमरूल - दिसम्बर १९१५ ई० में श्रीमती एनीबेसेन्ट ने कांग्रेस से होमरूल के सम्बन्ध में एक योजना बनाने को कहा, किन्तु १ सितम्बर १९१६ ई० तक कोई योजना नहीं बन सकी। अतः श्रीमती एनीबेसेन्ट ने स्वयं मद्रास के गोखले हाल में १९१६ ई० को होमरूल लीग की स्थापना की। तिलक ने अप्रैल १९१६ ई० में बेलगांव प्रान्तीय कांफ्रेंस के अवसर पर इंडियन होमरूल लीग की स्थापना की। अनेक स्थानों पर होमरूल लीग के कार्यालय खुले। बच्चन जी बताते हैं [९] कि युद्ध की समाप्ति पर ब्रिटेन और मित्र राष्ट्रों की विजय मनाने का आदेश हर सरकारी संस्था, सरकारी स्कूल को भेजा हुआ था। ऊँचामण्डी स्कूल को मेरे साथियों ने और मैंने उसी उत्साह से सजाया था जिस उत्साह से मैं अपनी बैठक में प्रतिवर्ष श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर झांकी सजाता था। उस रात नगर की बहुत सी सड़कों और इमारतों पर रोशनी हुयी थी। कर्कल और मुहल्ले के कई लड़कों के साथ मैं रोशनी देखने निकला था। बहुत सी जगहों पर जार्ज पंचम और क्वीन मेरी की तस्वीरें तथा यूनियन जैक झंडे लगे थे। कहीं-कहीं 'गाड़ सेव दि किंग' भी लिखा था। होमरूल लीग के दफ्तर में रोशनी हुयी थी पर वहाँ बिजली के बल्बों से एक बड़े लम्बे पट पर लिख दिया गया था- ''इंडिया फार इंडियन्स'' - और इतना कहना भी उस समय बड़े साहस का काम था। दूसरे दिन जगह-जगह इसकी चर्चा थी जैसे कोई नया और क्रांतिकारी नारा उठाया गया हो। होमरूल लीग के मैदान में पहले राष्ट्रीय सार्वजनिक सभायें होती थीं।

जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड - महात्मा गांधी की ८ अप्रैल १९१९ ई० की गिरफ्तारी की खबर सारे देश में फैल गयी। जनता के असंतोश को व्यक्त न होने देने के लिए डॉ. सत्यपाल और डॉ. किचलू को गिरफ्तार कर अज्ञात स्थान पर भेज दिया गया। १३ अप्रैल १९१९ ई० को बैशाखी के दिन अमृतसर के जलियॉवाला बाग में एक आम सभा पर जनरल ओ. डायर ने गोली चलवा दी, जिसमें हजारों लोग मारे गए। उस समय इलाहाबाद के छेदी लाल एक पंजाबी मित्र की साझेदारी में ठेकेदारी करते अमृतसर पहुंच गए। जलियॉवाला बाग कांड के समय वे वहीं थे। वे लौट कर बच्चन जी के घर गए और उन्होंने एक संध्या को 'मारछल्ला' का- 'मारशल लॉ' का वे इसी तरह उच्चारण करते थे, जो आँखों से देखा, रोमांचकारी वर्णन किया था, उसे सुनकर बच्चन जी का परिवार स्तब्ध रह गया। बच्चन जी लिखते हैं- अंग्रेजी सरकार के अमानुषिक अत्याचारों की कथा सुनाते-सुनाते उनकी आँखों से आँसुओं की धारा बह चली थी और उनके मुंह पर माता के दाग के सारे गड्ढ़े भर गए थे। उस रात किसी ने खाना नहीं खाया और रसोई उठा दी गयी। अपने परिवार में उनसे अधिक भावुक व्यक्ति मैंने नहीं देखा था।

मारशल लॉ के दिनों का जैसा भीषण वर्णन उन्होंने किया था उसकी छाया भी मुझे कई वर्षों बाद आधिकारिक रिपोर्ट के पढ़ने पर न मिली थी।[१०]

इस विवरण का असर बच्चन जी पर इतना पड़ा था कि रौलट एक्ट के विरोध में जब जनसभा हो रही थी उस समय भी सोच रहे थे कि अचानक जनता पर गोलियां चलने लगी होंगी तो उसने क्या सोचा होगा ? उस दिन मालवीय जी के सभा पर गोलियां चलने लगतीं तो हम क्या करते।[११]

असहयोग आन्दोलन - सितम्बर १९२० ई० में कलकत्ता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन बुलाया गया । इसमें गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। जिसकी दिसम्बर १९२० ई० के नागपुर कांग्रेस में पुष्टि कर दी गयी। इसी समय गांधी जी मुहम्मद अली और ण्ण्णौकत अली आदि इलाहाबाद आए। बच्चन जी लिखते हैं- अलीभाई तूफान उठाते हैं। गांधी जी नपी तुली भाषा में बात कहते हैं- न स्वर में कोई उतार-चढ़ाव, न शैली में कहीं श्रृंगार-अलंकार, न सिर झटकते हैं न हाँथ फेंकते हैं, पर एक-एक शब्द में इस्पाती दृढ़ता है- जैसे कोई लोहे की कलम से पत्थर पर लिख रहा हो। वे अपने अहिंसात्मक असहयोग की व्याख्या करते हैं। स्कूल-कॉलेज, कचहरी-अदालत, सरकारी नौकरी, विधान सभाओं और सरकारी खिताबों का बहिष्कार करने को कहते हैं। चर्खा चलाने, खादी पहनने और हिन्दू-मुस्लिम एकता बनाए रखने की अपील करते हैं। अन्त में एक वादा करते हैं कि अगर जनता उनके बताए कार्यक्रम पर अमल करे तो वे एक साल में स्वराज प्राप्त करा सकते हैं।[१२]

इसी समय इलाहाबाद विश्वविद्यालय में मोहनलाल जी लिपिक थे, उन्होंने अपना पद छोड़ दिया तथा अपने घर के बरामदे में दो करघे गड़वा दिए। दो जुलाहे नौकर रख लिए कुछ जुलाहिने हॉथ कते सूत से कपड़ा तैयार कराने लगीं। घर की औरतों ने भी चर्खा हाँथ में लिया, बाहर ताना लगवाने के लिए लम्बा मैदान था। उन दिनों हम लड़कों (बच्चन जी) ने भी कितना चर्खा काता, कितना ताना लगाया, कितनी नरी भरी और कितनी बार करघे पर पांव लटकाकर बैठने और शाटल या ढरकी चलाने का अभ्यास किया। वह सब कितना रोचक और कौतूहलपूर्ण लगता था। साथ ही इस बात का गर्व भी होता था कि हम राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ हैं और देश की सेवा कर रहे हैं। गांधी जी उन दिनों चर्खा और खद्दर पर कितना जोर देते थे- जो चर्खा कातता है वह स्वराज को नजदीक लाता है जो खद्दर पहनाता है वह आजादी का सिपाही है।[१३]

बच्चन जी स्कूल छोड़ने के लिए छटपटाते थे परन्तु ऐसा करने से रोक दिए जाते थे। हाँ चर्खा चलाने और खादी पहनने की आजादी थी। वे गांधी जी के आन्दोलन में किसी न किसी रूप में भाग लेते रहे। सभाओं में जाते, नेताओं का व्याख्यान सुनते। भारत माता की जय, महात्मा गांधी की जय बोलते, गांधी जी के पत्र-यंग इंड़िया, नव जीवन को पढ़ते।[१४]

चौरी चौरा काण्ड - ५ फरवरी १९२२ ई० को गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा स्थान पर पुलिस ने अहिंसात्मक आन्दोलनकारियों पर गोली चला दी, जब उनकी गोलियां समाप्त हो गयीं तब वे भाग कर थाने में छिप गए। उत्तेजित भीड़ ने थाने में आग लगा दी। इस घटना को बच्चन जी लिखते हैं एक दिन समाचार पढ़ता हूँ चौरी चौरा में पुलिस थाने को आग लगा दी गयी। २०-२२ पुलिस मैन को मौत के घाट उतार दिया गया। गांधी जी आन्दोलन स्थगित कर देते हैं। कुछ दिन

बाद खबर पढ़ता हूँ कि वे गिरफ्तार हो गए, फिर भी उन्हें छः वर्ष की सजा हुयी, फिर भी जेल में उनका ऑपरेशन हुआ, फिर भी वह छोड़ दिए गए। सन् १९२४ पहुंच गया। आन्दोलन की आग ठण्ढ़ी है। आज यहां कल वहां हिन्दू-मुस्लिम दंगे हो रहे हैं। गांधी जी का प्रायश्चित उपवास भी उन्हें नहीं रोक पाता। एक पराजय की भावना देश भर पर छा गयी है एक कवि गाता है-

''आज खड्ग की धार कुण्ठित है, खाली तूणीर हुआ;
विजय पताका झुकी हुयी है, लक्ष्य भ्रष्ट यह तीर हुआ।''

१९२५ ई० जन साधारण की दृष्टि सें राजनैतिक शिथिलता, स्थिरता का वर्ष है।[१५]

गांधी जी की दांडी यात्रा- १२ मार्च १९३० ई० को गांधी जी ने साबरमती आश्रम से अपने ७८ सहयोगियों के साथ २०० मील चलकर ६ अप्रैल १९३० ई० को प्रातः काल 'दाण्डी' नामक स्थान पर नमक कानून भंग किया। इस समय हरिवंश राय बच्चन जी एम.ए. में थे। वे लिखते हैं[१६] मेरी एम.ए. प्रीवियस की परीक्षा से पहले ही गांधी जी की दांडी यात्रा आरम्भ हो गयी थी और उनके प्रतिपग से देश में राष्ट्रीय जागरण और जोश भरने लगा। बे मन से मैंने परीक्षा दे दी, पास भी हो गया, पर जुलाई में जब यूनिवर्सिटी खुली तो मैंने पढ़ाई छोड़ दी। कुछ पारिवारिक चिन्ताओं और कुछ राजनैतिक हलचलों के कारण मेरा मन पढ़ाई की तरफ से उचट गया था। मैं आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने की स्थिति में न था, जुलूसों में नारे लगाता, सभाओं में ण्णमिल होता। घर में चर्खा चलाता, जमुना पार गांवों में जाकर व्याख्यान देता। कुछ रचनात्मक कार्य करने को भी मैंने सोचा- हम खद्दर का प्रचार करेंगे। महेश, प्रकाश और मैंने एक टीम बनाई, खादी भण्डार से हम लोग एक गट्ठर उठाते, मैं गज से नापता, प्रकाश हिसाब रखते और इस तरह हम गली-गली घूमते। हमें एक दिन बड़ी प्रसन्नता हुयी जब पं. जवाहर लाल नेहरू का ध्यान हमारी खद्दर प्रचारक टीम की ओर आकर्षित हुआ और उन्होंने भरी सभा में हमारी प्रशंसा की। उन्हीं दिनों मैंने जुलूसों में गाने के लिए कई राष्ट्रीय गीत लिखे जिसमें- 'सर जाए तो जाए पर हिन्द आजादी पाए' - वाला गाना बहुत प्रसिद्ध हुआ और एक बार इसे महात्मा गांधी की उपस्थिति में श्याम कुमारी नेहरू ने हजारों लोगों से गवाया। तब शायद किसी ने जाना भी नहीं था कि यह गीत किसका लिखा था और न मुझे ही इच्छा थी कि कोई जाने। गीत का जोश फैल रहा था और देश के लिए मर मिटने की आन पर शान चढ़ रही थी- व्यक्ति को श्रेय देने का क्या मतलब? पर जैसे-जैसे नेता लोग गिरफ्तार होते गए आन्दोलन ठण्ढ़ा पड़ने लगा, फिर समझौते शुरू हुए और असफल होने पर दमन शुरू हुआ। समझौता के साथ ही जनता का सम्पर्क आन्दोलन से कम होने लगा, छूट गया।

१९३७ का चुनाव - १९३५ ई० के अधिनियम द्वारा अखिल भारतीय संघ की स्थापना की गयी तथा केन्द्र में द्वैध शासन स्थापित किया गया। १ अप्रैल १९३७ ई० से इसे प्रांतीय क्षेत्रों में लागू कर दिया, जिसके बाद प्रांतों में चुनाव कराए गए। फलस्वरूप छः प्रांतों मद्रास, बम्बई, बिहार, उड़ीसा, उत्तर-प्रदेश और मध्य-प्रदेश में कांग्रेस को स्पष्ट बहुमत मिला तथा तीन प्रांतों बंगाल, असम और उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत में कांग्रेस को अधिक स्थान प्राप्त नहीं हुए। सिंध और पंजाब में नहीं के बराबर स्थान प्राप्त हुए। इस संदर्भ में हरिवंश राय जी लिखते हैं[१७]- सन् १९३७ ई० में देश के ग्यारह प्रांतों में से ६ कांग्रेसी सरकारें बन गयी थीं। १९३९ ई० में

योरोप में द्वितीय महासमर छिड़ने पर जब वायसराय ने बिना कांग्रेसी सरकारों की अनुमति के बिना देश को युद्ध में झोंक दिया तो कांग्रेसी सरकारों के लिए इसके सिवा कोई चारा न था कि वे त्यागपत्र दे दें। मैं राजनीतिक नहीं हूँ पर मुझे अपनी राय व्यक्त करने का अधिकार है भले ही वह गलत हो। मैं समझता हूँ कांग्रेस के गलत कदम यहीं से ण्रू हुए थे। गांधी जी के दो आन्दोलन - असहयोग (१९२० का) और सत्याग्रह (१९३० का)-जन आन्दोलन थे। सारे देण्ण का आवाह किया गया था कि वह उसमें भाग ले और देश ने ऐसा किया भी था। उत्साह, उल्लास, त्याग, बलिदान, साहस और कभी-कभी दुःसाहस की भी लहरें देश भर में उठी-गिरी थीं। १९४० ई० के व्यक्तिगत सत्याग्रह ने देश को अछूता छोड़ दिया था क्या इससे गांधीजी ने यह अनुभव नहीं कर लिया था, यह स्वीकार नहीं कर लिया था कि जनता पर अब उनकी पकड़ छूट गयी है? इसका लाभ मुस्लिम लीग और ब्रिटिश गवर्नमेन्ट दोनों ने उठाया और कांग्रेस के विरूद्ध दोनों ने अपनी स्थितियां मजबूत की। युद्ध भारत की सीमा पर पहुंच गया था। 'क्रिप्स मिशन' के प्रस्तावों को गांधी जी ने 'पोस्ट डेटेड चेक' कहकर ठुकरा दिया था। परन्तु मिशन के असफल होने का अफसोस ब्रिटिश सरकार को शायद ही हुआ हो। भारत के एक वर्ग की आर्थिक विवषतायें और दूसरे वर्ग की आर्थिक महत्वाकांक्षायें उसे युद्ध में भाग लेने को विवश कर रही थीं। ब्रिटिश सरकार जानती थी कि कांग्रेस के सहयोग देने पर भी युद्ध प्रयत्नों में कोई विशेष वृद्धि न होने को थी।

भारत छोड़ो आन्दोलन - ८ अगस्त १९४२ ई० के भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रस्ताव बम्बई कांग्रेस अधिवेशन में पास किया गया। ९ अगस्त को प्रातः काल तक प्रायः सभी बड़े नेता गिरफ्तार कर लिए गए थे। इस संदर्भ में हरिवंश राय बच्चन जी लिखते हैं[१८] कि-अगस्त १९४२ का भारत छोड़ो आन्दोलन किंकर्तव्यविमूढ़ता की स्थिति में छेड़ा गया था और उसके पीछे यह गलत अनुमान हो तो कोई आश्चर्य नहीं कि निकट भविष्य में जापान भारत पर आक्रमण करेगा। जिसमें हार भारत सरकार की, पर जीत भारतवासियों की होगी। मुसलमान आन्दोलन से तटस्थ रहे, साम्यवादी दल और विचारधारा के लोगों ने आन्दोलन की भर्त्सना की और सामरिक तैयारियों से लैस ब्रिटिश सरकार ने आन्दोलन को एक सप्ताह के अन्दर कुचलकर धर दिया। १२ अगस्त को हमारी यूनिवर्सिटी (इलाहाबाद) के विद्यार्थियों के जुलूस पर गोली चली और यूनिवर्सिटी दशहरे तक की छुट्टियों के लिए बन्द हो गयी। गोली हमारे मकान से कुछ फर्लांग के फासले पर कटरा कचहरी के सामने चली थी मैं उस समय यूनिवर्सिटी में था, लौटा तो मालूम हुआ कि 'तेजी' गोली की आवाज सुनकर हताहतों की सहायता के लिए घर से कचहरी की ओर चल पड़ी हैं। मैं भाग कर उन्हे वापस लाने गया। पुलिस वैन से कर्फ्यू की घोषणा हो रही थी। लोग दूकानें बंद कर रहे थे, सड़कें सुनी हो रही थी, जुलूस तितर-बितर हो चुका था। गोली से मरे एक विद्यार्थी की लाश को लड़के यूनियन में ले आए। शहर घरों में बन्द कर दिया गया था। कई दिनों तक कर्फ्यू लगा रहा, फिर धीरे-धीरे कर्फ्यू के घंटे कम किए गए और नगर का सामान्य जीवन आरम्भ होने में १०-१५ दिन लग गए। खबरों पर जबर्दस्त सेंसर लगा था। अखबारों ने विरोध में सम्पादकीय लिखना बन्द कर दिया था। बहुत दिनों तक जनता को इसका पता ही नहीं चला कि गांधी जी तथा अन्य नेता कहाँ, किस जेल में बन्द हैं। वे दिन हमारे कितने भय, भ्रम, संदेहों में बीते, कितनी लाचारी में, कितनी बेकारी में।

पाकिस्तान की माँग एवं दंगे – जिन्ना ने धर्म के आधार पर राष्ट्रीयता के सिद्धांत को आगे रखकर मुसलमानों के लिए पाकिस्तान की मांग की थी। हिन्दू और मुसलमान अलग-अलग राष्ट्र हैं वे साथ नहीं रह सकते। उनको अलग-अलग देशों की आवश्यकता है- इसको व्यावहारिक रूप से सिद्ध करने का इससे अच्छा और कारगर उपाय क्या हो सकता था कि नगर-नगर, गांव-गांव, हिन्दू-मुस्लिम दंगे कराए जॉय।

यही मुस्लिम लीग देश भर में करा भी रही थी। विशेषकर पंजाब और बंगाल में, जो प्रस्तावित पाकिस्तान में जाने वाले हिस्से थे।[१६]

१९४६ ई० की गर्मियों में मैंने (बच्चन जी) अपने को एक रेजीडेन्ट के साथ सम्बद्ध कराया, जो इलाहाबाद में कैंट में थी। पाकिस्तान के लिए मुस्लिम लीग का आन्दोलन जोर पकड़ता जा रहा था, शहर में आए दिन हिन्दू-मुस्लिम दंगे होते थे।[२०]

हरिवंश राय बच्चन जी लिखते हैं कि "लायलपुर के मुसलमानों के मिजाज से गैर मुस्लिमों के जान-माल के खतरे का आभास पाकर गोविन्द जी अपने पति सरदार बलवन्त सिंह और अपने दो लड़के तथा लड़कियों को लेकर हमारे यहाँ (डॉ. बच्चन जी) आ गयी थीं, उधर होशियारपुर में हिन्दू-मुस्लिम दंगो ने भीषण रूप लिया तो बाबू जी एवं बीजी ने तो वहीं रहने का निश्चय किया पर अपनी पाँचों लड़कियों को हमारे पास भेज दिया। हमारा घर अच्छा खासा शरणार्थी-शिविर बन गया। खैरियत यह थी कि इस समय मकान हमारे पास बड़ा था और किसी को विशेष कष्ट नहीं हुआ। 'तेजी' ने अपने स्वभाव के अनुसार एक-एक का ध्यान रखा"[२१]

संदर्भ

१. हरिवंश राय बच्चन-क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ० ३२; ३३, आत्मकथा चार खण्डों में प्रकाशित है- प्रथम खण्ड 'क्या भूलूं क्या याद करूं', द्वितीय खण्ड 'नीड़ का निर्माण फिर', तृतीय खण्ड 'बसेरे से दूर' और चौथा खण्ड 'दशद्वार' से 'सोपान' तक। डॉ. बच्चन श्रद्धांजलि स्मृति अंक २००६, संपा. हरिहर लाल श्रीवास्तव, पृ० १२१-१२८, इतिहास निधि है- बच्चन जी की आत्मकथा, डॉ. देवी प्रकाश त्रिपाठी, वाराणसी, २००६.

२. क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ० ३९

३. क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ० ४०

४. क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ० १३८

५. क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ० १३

६. क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ० ३९

७. क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ० १३८

८. क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ० १३९

९. क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ० २६, २७

१०. क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ० १४०

११. क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ० १४० नीड़ का निर्माण फिर पृ० ६७, ६८

१२. क्या भूलूं क्या याद करूं, पृ० १९४, ६६

१३. नीड़ का निर्माण फिर पृ० २०८

१४. नीड़ का निर्माण फिर पृ० २०८, २०९

१५. नीड़ का निर्माण फिर पृ० २४१, २४२

१६. नीड़ का निर्माण फिर पृ० २३७

१७. नीड़ का निर्माण फिर पृ० २४२

१८. नीड़ का निर्माण फिर पृ० २०८, २०६

१९. नीड़ का निर्माण फिर पृ० २४१, २४२

२०. नीड़ का निर्माण फिर पृ० २३७

२१. नीड़ का निर्माण फिर पृ० २४२

सहायक ग्रंथ

भारत का बृहत् इतिहास, भाग ३-मजुमदार, रायचौधुरी, दत्त (१९८९)

आधुनिक भारत का इतिहास- बी.एल. ग्रोवर, यशपाल (१९८७)

आधुनिक भारत-कालूराम भार्मा, प्रकाश व्यास (२००१)

******